सवा तीन लाख साल पुराने मानव पदचिन्ह

एक ज्वालामुखी की ढलान पर तीन इंसानों के पदचिन्ह मिले हैं। ये पदचिन्ह उस ज्वालामुखी की राख में अश्मीभूत हो गए हैं मगर दिलचस्प बात यह है कि ये चिन्ह कोई सवा तीन लाख साल पहले बने थे। यदि इनकी उम्र की पुष्टि हो जाए तो ये शायद होमो प्रजाति के सबसे प्राचीन पदचिन्ह साबित होंगे।

दक्षिण इटली के रोकामोनफिना ज्वालामुखी पर मिले पदचिन्हों को स्थानीय लोग शैतान के कदम कहते हैं। इटली के पडुआ विश्वविद्यालय के पाओलो मिएटो और उनके दल ने इन पदचिन्हों की जांच करके पाया कि ये लगभग 3 लाख 85 हज़ार से सवा तीन लाख वर्ष पूर्व फूटे ज्वालामुखी की राख में अश्मीभूत हुए हैं। अश्मीभूत होने का मतलब है कि किसी चीज़ की संरचना का पत्थर में बदल जाना। जीवाश्म बनने की यह एक प्रमुख विधि है। रेडियोमापन तकनीक से इस राख की उम्र सवा तीन से पौने चार लाख साल के बीच आंकी गई है।

तीन में से एक व्यक्ति ने 27 पदचिन्ह छोड़े हैं और ये ज़िगज़ैग पैटर्न में हैं। लगता है कि ढलान चढ़ने में आसानी के लिए वह व्यक्ति आड़ा-तिरछा चला होगा (या शायद चली होगी)। दूसरे व्यक्ति के 19 चिन्ह हैं मगर कहीं-कहीं पैर के साथ हथेलियों के भी निशान हैं। तीसरे व्यक्ति के 10 पदचिन्ह एक सीधी रेखा में है।

प्रत्येक पदचिन्ह लगभग 20 से.मी. लम्बा और 10 से.मी. चौड़ा है। आम तौर पर तलुए की लम्बाई हमारी कुल ऊंचाई का करीब 15 प्रतिशत होती है। इस आधार पर गणना करें, तो कदमों के निशान छोड़ने वाले जीव की ऊंचाई मात्र 1.35 मीटर रही होगी।

इतने पुराने ज़माने (सवा तीन लाख साल पूर्व) के ये पदचिन्ह सम्भवतः *होमो हाइडलबर्जेन्सिस* के होंगे। ऐसा माना जाता है कि *होमो हाइडलबर्जेन्सिस* करीब सवा तीन लाख साल पूर्व अफ्रीका से यूरोप प्रवास कर चुका था। कई मानव शास्त्रियों के अनुसार *हाइडलबर्जेन्सिस* यूरोप में निएन्डर्थल मानव में विकसित हुआ और अफ्रीका में *होमो सेपियन्स* (यानी वर्तमान मानव) में।

इससे पहले तंज़ानिया में ओल्डुवाई गॉर्ज के निकट मानव सदृश जीव के 37 लाख साल पुराने पदचिन्ह मिल चुके हैं। मगर वे होमो प्रजाति के नहीं बल्कि *ऑस्ट्रेलोपिथिकस अफारेन्सिस* के हैं- वही प्रजाति जिसकी एक सदस्य का नामकरण लूसी किया गया था। इस लिहाज़ से इटली में मिले पदचिन्ह सबसे प्राचीन होमो पदचिन्ह हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

एक केंकड़े के लिए चींटियों की बलि

हिन्द महासागर के क्रिस्मस द्वीप में एक ज़मीनी केंकड़े को बचाने के लिए चींटियों का सफाया करना पड़ा है। इन चींटियों को सिरफिरी चिंटियां कहा जाता है क्योंकि ये बहुत तेज़ी से हरकत करती हैं। उक्त केंकड़े को बचाना इसलिए ज़रूरी बताया गया है क्योंकि ये क्रिस्मस द्वीप की इकोसिस्टम में प्रमुख भूमिका अदा करते हैं। इस द्वीप पर लगभग साढ़े चार करोड़ रेड लैण्ड केंकड़े हैं। ये यहां के बरसाती जंगल में ज़मीन पर पड़ी पत्तियों को चट करते हैं। बरसाती जंगल में फर्श को साफ रखना एक प्रमुख काम है।